39 वर्षों से निरंतर

महिला सुरक्षा से समझौता नहीं 07

मदरसे में जाली नोटों का छापाखाना 09

गाय के गोबर से चला जहाज 12

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

भाद्रपद शु. 13, वि.2081, युगाब्द 5126, 16 सितम्बर, 2024

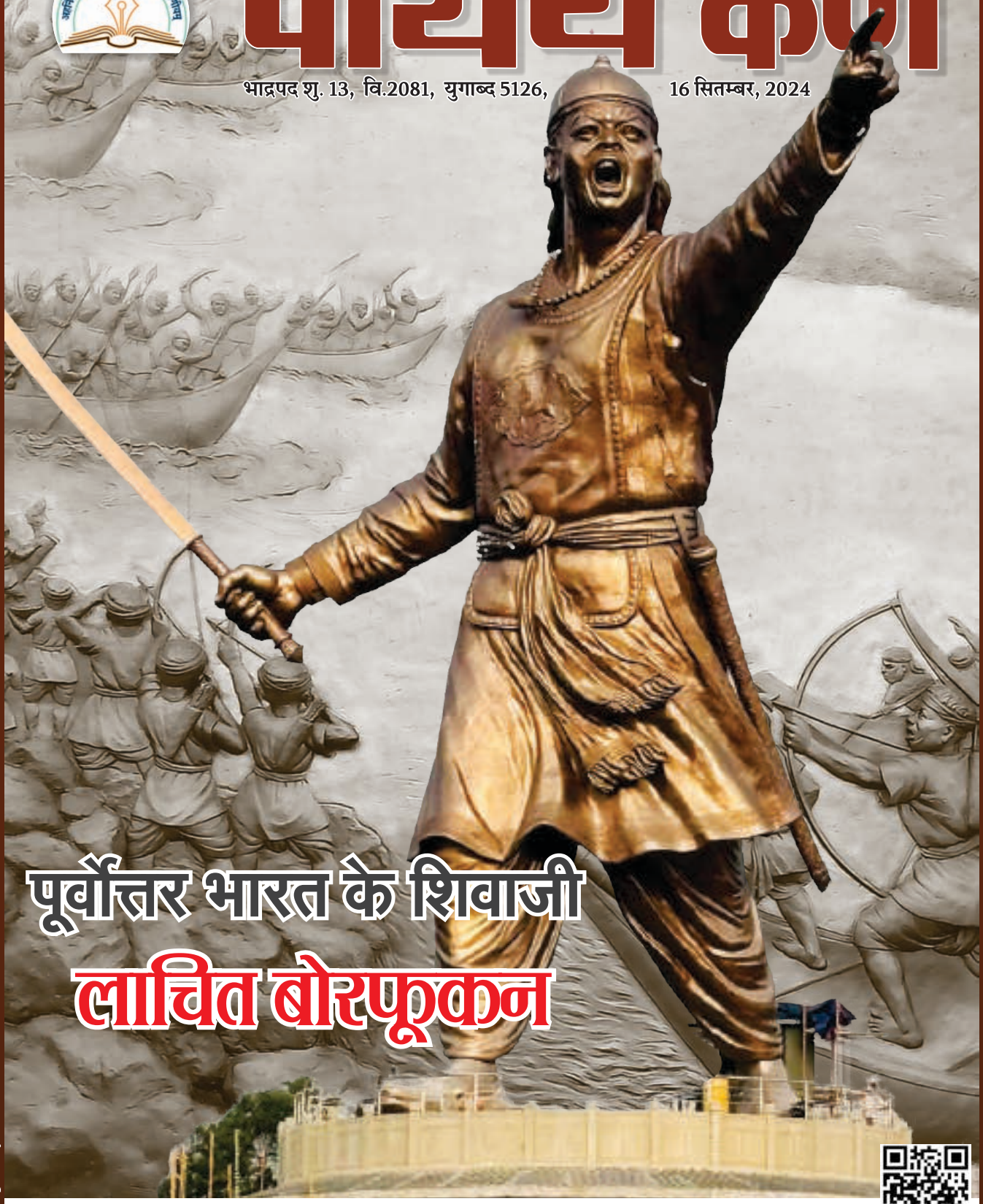

पूर्वोत्तर भारत के शिवाजी

लाचित बोरफूकन

www.patheykan.com

patheykan@gmail.com @patheykanofficial @patheykanofficial @patheyofficial1 @patheykan

संपादकीय

16 जुलाई का अंक पढ़ा। संपादकीय 'अंतिम हथियार' में राहुल गांधी के वक्तव्य का विश्लेषण विशेष था। वस्तुत: व्यक्ति हिंसक हो सकता है किन्तु हिन्दुत्व के कारण हिंसक हो, यह संभव नहीं। हिन्दुत्व तो सत्य और अहिंसा का पर्याय है। अत: राहुल गांधी के अपरिपक्व विचार से सहमत होना संभव नहीं।

*-**राजू मेहता**,गुलाब नगर, जोधपुर*

ज्ञानवर्धक अंक

16 अगस्त का संपादकीय पढ़ा। संघ से जुड़ने को लगा प्रतिबंध हाल ही में हटाना स्वागत योग्य है। बांग्लादेश में हाल ही हुए सत्ता परिवर्तन के साथ अल्पसंख्यक समुदायों से दुर्व्यवहार चिंताजनक एवं सोचनीय है। अंक में सभी स्तंभ ज्ञानवर्धक हैं। संपादक मण्डल को साधुवाद।

*-**रामअवतार टेलर,** हाथोज,झोटवाड़ा*

पाथेय का रंग

पाथेय कण का रंग अब मुझ पर भी चढ़ गया है। मैं हमेशा प्रत्येक अंक को पढ़ता हूं और इससे बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

*-**गोपाल पाण्डे**,आदर्श नगर,भीलवाड़ा*

विचारोत्तेजक व सामयिक लेख

16 अगस्त के अंक में प्रकाशित श्री प्रशांत पोल का ''क्या हम एक और विभाजन की दिशा में बढ़ रहे है?'' लेख बहुत विचारोत्तेजक और सामयिक था। आज देश की अधिकांश मुस्लिम आबादी न केवल सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई है अपितु राष्ट्र की मुख्य धारा से दूर भी है। आज यदि केंद्र सरकार मुस्लिम समाज के व्यापक हित में कोई योजना लाती है तब भी 'बांटो और राज करो' की मानसिकता वाले राजनीतिक दल मुस्लिम समाज को उसके प्रति गुमराह करने से बाज नहीं आते।

इसका ताजा उदाहरण है वक्फ कानून में परिवर्तन सम्बन्धी विधेयक। स्वयं मुस्लिम समाज के अधिकांश नेता भी अपना स्वार्थ साधने के लिए समाज को निरन्तर कट्टरता के मार्ग पर धकेलने में लगे हुए हैं। भावी भारत की सुदृढ़ता के लिए इस निराशाजनक स्थिति का समुचित समाधान खोजना बहुत आवश्यक है।

*-**सम्पत तोषनीवाल,** दिल्ली*

न्यायालय का रुख

16 अगस्त के अंक में विशेष रपट पढ़ी। माननीय न्यायालय द्वारा जिस प्रकार अजमेर दरगाह के खादिम गौर चिश्ती को बरी करना बिना सबूत के, संयुक्त बैंच द्वारा नुपूर शर्मा को दोषी ठहराना एवं कमलेश तिवारी मामले में अभियुक्त कासिम को जमानत पर रिहा करना न्यायालय के रूख पर प्रश्नचिह्न अवश्य लगाते हैं। माननीय न्यायालय को ऐसे निर्णय करते समय जन मानस की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेने चाहिए ताकि आमजन में माननीय न्यायालय का विश्वास बना रहे।

- bijendra4223@gmail.com

बांग्लादेश

पूरी दुनिया की नजर बांग्लादेश के वर्तमान हालात पर है। भारत की लगभग 4 हजार किमी से भी ज्यादा सीमा बांग्लादेश से जुड़ी है जो सामरिक रूप से भारत के हित में नहीं हैं। बांग्लादेश में अस्थिरता के बाद भारत में सीमा पार घुसपैठ की आशंका बनी हुई हैं।

*-**शुभम वैष्णव,** सवाईमाधोपुर*

दीपावली विशेषांक

अक्टूबर माह में पाथेय कण का दीपावली विशेषांक निकालने की योजना है। विषय के संबंध में पूर्व में दी गई सूचना में थोड़ा बदलाव है। विशेषांक का विषय रहेगा '**महिला सुरक्षा**'। इस विषय पर तथ्यात्मक लेख लिखने को इच्छुक लेखक / लेखिकाएं संपादक, पाथेय कण से मो. 9414312288 पर संपर्क कर सकते हैं।

विज्ञापन दाता कृपया मो. 9929722111 पर श्रीमान ओमप्रकाश जी (प्रबंध संपादक) से सम्पर्क करें।

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें

(दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- **स्वामी विवेकानन्द की शिकागो यात्रा और राजस्थान**
  https://patheykan.com/?p=29206
- **देवनारायण जी मेला**
  https://patheykan.com/?p=29190
- **आडुजीवितम : द गोट लाइफ**
  https://patheykan.com/?p=29151

पाथेय कण
भाद्रपद शुक्ल 13 से आश्विन कृ.13 तक
विक्रम संवत 2081
युगाब्द 5126
16-30 सितम्बर, 2024
वर्ष : 40 अंक : 12

सम्पादक : रामस्वरूप अग्रवाल
सह सम्पादक : मनोज गर्ग
प्रबंध सम्पादक : ओमप्रकाश
सह प्रबंध सम्पादक : श्याम सिंह
अक्षर संयोजन : कौशल रावत

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान)
E-mail : patheykan@gmail.com

पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक: माणकचन्द

सहयोग राशि
एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर प्रात: 10 से सायं 5 बजे तक संपर्क करें- 79765 82011 इसके अतिरिक्त समय में वाट्सएप व मैसेज करें अथवा ईमेल पर जानकारी दें। (अति आवश्यक होने पर मो.न. 9166983789 पर मोहित जी से संपर्क कर सकते हैं)

सचेत करता वैश्विक परिदृश्य

पिछले दिनों विश्व के कई देशों में घटित कुछ घटनाएं तथा घटनाक्रम सामान्य दिखाई देते हुए भी उनके पीछे गंभीर निहितार्थ हैं।

(1) इटली के मोनफाल्कोन की मेयर ने शहर में क्रिकेट खेलने पर प्रतिबंध लगा दिया है। यदि कोई इस प्रतिबंध को तोड़ता है तो उसे 100 यूरो (यानी लगभग 9 हजार 500 रुपये) का जुर्माना देना पड़ता है।

इस प्रतिबंध का कारण क्या है? इस शहर की जनसंख्या के एक तिहाई बांग्लादेशी मुसलमान हैं, जो 1990 के दशक के अंत में शिपबिल्डिंग (जहाज निर्माण)के कार्य में मजदूरी करने वहां आ गए थे। वहां क्रिकेट खेलने वाले यही बांग्लादेशी हैं। मोनफाल्कोन शहर की मेयर अन्ना मारिया सिसिंट कहती हैं कि *''इन बांग्लादेशी प्रवासियों के कारण शहर की सांस्कृतिक पहचान खतरे में है तथा हमारा इतिहास मिटाया जा रहा है।''* मेयर ने शहर के दो इस्लामी केन्द्रों में सामूहिक नमाज पर प्रतिबंध लगा दिया है। उनका कहना है कि इसके कारण स्थानीय निवासियों को परेशानी होती है तथा शहरी नियोजन नियमों का उल्लंघन होता है। वे बांग्लादेशी प्रवासी मुसलमानों से इतनी घबराई हुई हैं कि उन्होंने शहर के चौराहों से बैंचें हटवा दी जहां बांग्लादेशी बैठा करते थे। क्या इन कदमों से समस्या का समाधान होगा?

इटली में बांग्लादेशी मुसलमानों के प्रवेश का क्या कारण है? कारण है-इटली में स्थानीय निवासियों की घटती जन्मदर तथा स्थानीय युवाओं का शिपयार्ड जैसे कार्यों में काम करने के लिए तैयार नहीं होना। एक अनुमान के अनुसार ऐसी स्थिति में 2050 तक प्रतिवर्ष 2लाख 80 हजार विदेशी श्रमिकों की आवश्यकता होगी। स्पष्ट है कि उस देश की पहचान तो खतरे में पड़ने ही वाली है जैसा कि मोनफाल्कोन शहर की मेयर को आशंका है।

(2) यूरोप के देश हंगरी के प्रधानमंत्री विक्टर ओरबन ने जॉर्ज सोरोस (अमरीकी अरबपति) पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा है, *''जॉर्ज सोरोस यूरोप को मुसलमानों से भर देना चाहते हैं। वे यूरोपियन यूनियन के कई सांसदों को पैसे देकर कई ऐसे कानून पास करवा रहे हैं जो मुसलमानों और घुसपैठियों के पक्ष में हैं।''*

प्रधानमंत्री ओरबन ने कहा है कि वे अपनी संप्रभुता और संस्कृति की रक्षा करेंगे। यद्यपि उन्होंने घुसपैठ रोकने तथा आव्रजन नीति को कड़ा करने के लिए कुछ कदम उठाए हैं, परंतु क्या अकेले हंगरी यूरोप को बचा पायेगा?

कई पाठकों को शायद याद हो कि जॉर्ज सोरोस मोदी के विरुद्ध भी बयान देते रहे हैं। जॉर्ज ने कहा था कि नरेन्द्र मोदी लोकतांत्रिक नहीं हैं। वे मोदी को हटाना चाहते थे।

(3) पिछले समय मुस्लिम घुसपैठ तथा प्रवासियों से यूरोप के लगभग सभी ईसाई बहुल देश त्रस्त रहे। इस कारण से इटली, फिनलैंड, स्विट्जरलैंड, स्लोवाकिया, हंगरी, क्रोएशिया, चैक रिपब्लिक जैसे देशों में राष्ट्रवादी दलों (जिन्हें वहां दक्षिणपंथी कहा जाता है) की सरकारें बनी। फ्रांस और ब्रिटेन में भी ऐसी ही सरकारें थी, जो मुस्लिम कट्टरता व आतंकी घटनाओं पर दृढ़ता से कार्रवाई कर रही थीं, परंतु पिछले दिनों हुए चुनाव में वामपंथी झुकाव वाले दल दोनों ही देशों में विजयी हुए हैं। इसमें कुछ आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि दोनों ही देशों में मुसलमानों ने वामपंथियों के साथ मिलकर सरकार पलटने में पूरा सहयोग किया।

वरिष्ठ पत्रकार प्रभु चावला लिखते हैं, ''ब्रिटेन में हुए एक सर्वे में पाया गया कि वहां के 49 प्रतिशत लोग आशंकित हैं कि ब्रिटिश मुस्लिमों और गोरे अंग्रेजों में सभ्यतागत युद्ध होगा।'' प्रभु चावला लिखते हैं कि इन्हीं लोगों ने राष्ट्रवादी कंजर्वेटिव पार्टी की ऋषि सुनक की सरकार को इस बार बुरी तरह से हरा दिया। जरूर वहां सत्ताविरोधी लहर (एंटी इनकंबेंसी) भी एक कारण रहा होगा, परंतु लोगों का मानना है कि मुस्लिम-वाम गठजोड़ प्रमुख कारण था।

पोलैंड ने साहसपूर्वक मुस्लिम शरणार्थियों को अपने देश में लेने से इंकार कर दिया है। हंगरी व इटली जैसे देश भी ऐसा ही साहस करते दिखाई देते हैं परंतु फ्रांस और ब्रिटेन की जीत से मुस्लिम कट्टरपंथियों के हौसले बुलंद हैं। भारत में भी वाम-लिबरल-जिहादी गठबंधन हिंदू समाज को तोड़ने में लगा है। वे एकजुट हो रहे हैं। इस बार के लोकसभा चुनावों में उन्होंने बहुत जोर लगाया।

(4) असम के मुख्यमंत्री हिमंत सरमा ने हाल ही में एक प्रेस वार्ता में बताया कि असम 2041 में मुस्लिम बहुल राज्य बन जाएगा। वहां मुस्लिम आबादी प्रति 10 वर्ष में लगभग 30 प्रतिशत बढ़ रही है परंतु हिंदू जनसंख्या में मात्र 16 प्रतिशत की वृद्धि ही होती है। वर्तमान में असम में मुस्लिम आबादी 40 प्रतिशत है जो स्वाधीनता के समय 12 प्रतिशत थी। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि को कम करने के लिए कदम उठाए हैं। परिणाम भी मिल रहे हैं। अगर मुस्लिम आबादी में वृद्धि कम होने लगती है तो हम मानेंगे कि हमने कुछ किया है?

प्रश्न यह है कि असंतुलित बढ़ती मुस्लिम आबादी की समस्या क्या असम की ही है, अन्य प्रांतों के मुख्यमंत्री इस संबंध में क्या कर रहे हैं? क्या मतदाता इस दृष्टि से जागरूक हैं?

– रामस्वरूप

आमुख कथा

पूर्वोत्तर भारत के शिवाजी

लाचित बोरफूकन

जिन्होंने मुगलों को चटाई धूल

लाचित बोरफूकन एक ऐसे रणकौशल निपुण वीर योद्धा थे जिनके पराक्रम के कारण मुगल असम सहित पूर्वोत्तर भारत को अपने अधीन नहीं कर सके। ऐसे भारत माँ के महान सपूत की यशोगाथा शेष भारत के लिए अनजानी सी रह गई, क्या यह घोर आश्चर्य नहीं है?

मुगलों और आहोम सेना (असम के आहोम साम्राज्य की सेना) के मध्य संघर्ष सन् 1616 से ही आरंभ हो चुके थे। कोई 26 बार दोनों सेनाएं आमने-सामने हुई। इतिहासकार मानते हैं कि इन लड़ाइयों में 17 बार आहोम तो 9 बार मुगल विजयी रहे। अंतत: औरंगजेब के समय 1671 के सराईघाट युद्ध में मुगल सेना की निर्णायक करारी हार हुई। इस सराईघाट युद्ध के हीरो (नायक) थे लाचित बोरफूकन।

यद्यपि 1648 में आहोम सेना ने मुगलों को गुवाहाटी व मानाह नदी के पार खदेड़ दिया था, परंतु सन् 1663 में असम के आहोम राजा जयध्वज की मुगलों से हुई हार के कारण गुवाहाटी पर मुगलों का आधिपत्य हो गया था। राजा जयध्वज को एक अपमानजनक संधि (घिलाझारी घाट संधि) पर हस्ताक्षर करने पड़े। उसके अनुसार हर्जाने के रूप में 1 लाख रुपए, 82 हाथी, 675 बंदूकें और 1 हजार जहाज मुगलों को देने पड़े। अपनी इकलौती बेटी तथा भतीजी को भी उस समय के मुगल शासक औरंगजेब के हरम में भेजना पड़ा। इस हार और अपमान के कारण टूट चुके राजा जयध्वज की शीघ्र ही मृत्यु हो गई।

जयध्वज के बाद राजा बने चक्रध्वज सिंह ने गुवाहाटी को फिर से प्राप्त करने तथा मुगलों को निर्णायक मात देने के लिए लाचित को अपना सेनापति बनाया। सेनापति को 'बोरफूकन' कहा जाने के कारण उनको लाचित बोरफूकन कहा जाता है।

लाचित ने आहोम सेना को फिर से संगठित किया। नए सैनिकों की भर्ती की गई। अस्त्र-शस्त्र इकट्ठे किए गए। नई तोपों तथा जल सेना के लिए नौकाओं का निर्माण कराया गया।

लाचित पुरानी संधि के अंतर्गत मुगलों से मित्रता का दिखावा भी करते रहे ताकि आहोम सेना के पुनर्गठन आदि की तरफ उनका ध्यान नहीं जाए।

1667 में औरंगजेब ने गुवाहाटी के लिए नया फौजदार फिरोज खान को भेजा। वह एक अय्याश किस्म का व्यक्ति था। उसने आहोम राजा से असमिया लड़कियों को उसके पास भेजने को कहा। इस कारण से लोगों में बहुत आक्रोश था।

लाचित ने इन परिस्थितियों से फायदा उठाते हुए उसी वर्ष यानी 1667 में मुगल सेना की घेराबंदी कर दी। परंतु गुवाहाटी के इटाखुली किले पर वे कब्जा करने में सफल नहीं हो रहे थे। बताते हैं कि लाचित ने अपने 10-12 सैनिकों को रात के अंधेरे में चुपचाप किले में प्रवेश करा दिया। उन्होंने मुगल तोपों में पानी भर कर उन्हें अप्रभावी कर दिया।

आहोम सैनिक ब्रह्मपुत्र के दोनों

किनारों को नियंत्रण में लेते हुए आगे बढ़ने लगे तथा मुगलों द्वारा अधीन कर लिए गए अधिकांश स्थानों को फिर से अपने कब्जे में ले लिया।

आहोम नौसेना ने मुगल सेना को चारों तरफ से घेर लिया। मुगल सूबेदार फिरोज खान को बंदी बना लिया गया तथा इटाखुली किले सहित गुवाहाटी फिर से आहोम राज्य के आधिपत्य में आ गया।

मुगल सेना की हार से औरंगजेब तिलमिला उठा। उसने आमेर (जयपुर) के मिर्जा राजा जयसिंह के पुत्र राजा रामसिंह (प्रथम) को लगभग 70 हजार सैनिकों की एक बड़ी सेना के साथ असम पर कब्जा करने के लिए भेजा। रामसिंह 27 दिसम्बर,1667 को असम के लिए रवाना हुआ।

रामसिंह दो वर्ष बाद 1669 में अपनी फौज के साथ मानाह नदी के तट पर पहुँचा। यहां हुई झड़प में आहोम सेना कुछ देर भी टिक नहीं पाई।

ऐसी स्थिति में लाचित ने कूटनीति अपनाते हुए गुवाहाटी से पीछे हटने का निर्णय किया। लाचित स्वयं रामसिंह से मिले और उसे भाई कहकर संबोधित किया। युद्ध को टालने की बात की। इस कारण से मुगल सेना लापरवाह हो गई जिससे लाचित को नई रणनीति बनाने का समय मिल गया।

मार्च 1671 में सराईघाट के पास ब्रह्मपुत्र नदी में दोनों सेनाओं के बीच भीषण युद्ध हुआ। यह भारत के इतिहास में शायद एक मात्र युद्ध था जो पूर्णत: नदी में लड़ा गया। इस युद्ध में लाचित बोरफूकन ने रणकौशल का अद्भुत प्रदर्शन किया।

आहोम सेना ने मुगल सेना को ब्रह्मपुत्र नदी पार करने से रोक दिया तथा मुगल सैन्य अधिकारी मीर नवाब की पैदल सेना को खदेड़ दिया।

लाचित ने छापामार युद्ध की रणनीति अपनाई। आहोम सैनिक आधी रात को किलों से निकलते और मुगल सेना पर छिपकर हमला करते थे। एक जहाज में बैठे मुगल फौजदार मुनव्वर खां को आहोम जहाजों ने घेर कर मार दिया।

लाचित ने मुगल सेना पर दो दिशाओं से प्रहार किया। मुगलों के कई सिपहसालार (सैन्य अधिकारी) तथा चार हजार सैनिक मारे गए। शेष सेना भाग खड़ी हुई।

आहोम सेना ने मुगल सैनिकों को मानाह नदी के पार तक खदेड़ा। *सराईघाट के इस निर्णायक युद्ध में लाचित की सेना विजयी रही। यह विजय का दिन था आश्विन शुक्ल दशमी अर्थात् विजयादशमी का (इस वर्ष 12 अक्टूबर)।* लाचित बीमार होने के कारण इस विजय के एक वर्ष पश्चात् 1672 में मृत्यु को प्राप्त हुए।

इसके बाद एक बार फिर मुगलों ने 1682 में असम पर हमला किया था। इसे इटाखुली की लड़ाई कहा जाता है, जिसमें लाचित द्वारा तैयार की गई आहोम सेना विजयी रही। फिर कभी मुगल असम की ओर नहीं गए। इस प्रकार से वीर योद्धा लाचित बोरफूकन ने न केवल असम को वरन् पूरे उत्तर-पूर्वी भारत को मुगलों के अधीन होने से बचा लिया।

रामसिंह लाचित बोरफूकन की बहादुरी और रणकौशल से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने कहा, *''मैंने भारत के किसी भी हिस्से में इस तरह की हरफनमौला फौज नहीं देखी। एक ही सेनापति का फौज पर पूरा नियंत्रण है। प्रत्येक आहोम सैनिक नाव चलाने, तीरंदाजी में, खाइयां खोदने और बंदूक चलाने में माहिर है। मैं जंग के मैदान में खुद शामिल रहते हुए भी उनकी एक भी कमजोरी पकड़ नहीं पाया।''*

लाचित बोरफूकन का जन्म 24 नवम्बर, 1622 को असम के चराईदेऊ स्थान पर हुआ था। उनके पिता मोमाई तमुली बोरबरूआ भी एक सैन्य अधिकारी थे। लाचित की मां का नाम कुंती मोरान था। →

'देश से मामा बड़ा नहीं है'

बताया जाता है कि आहोम सेनापति लाचित बोरफूकन ने मुगल सेना को रोकने के लिए एक ऊँची व चौड़ी (लगभग 2 मीटर चौड़ी) मिट्टी की एक प्राचीर (दीवार) खड़ी करने का आदेश आहोम सेना की एक टुकड़ी को दिया था। ऐसी प्राचीर आक्रांताओं की बंदूकों की गोलियों व तोपों से रक्षा करने के साथ ही बंकर की तरह सैनिकों की सुरक्षा में उपयोगी होती है। इसे गोड़ (Gorh)कहा जाता है। इस सैन्य टुकड़ी के नायक लाचित के मामा थे। प्राचीर रात भर में बनाई जानी थी। बीमार होने के बावजूद लाचित रात्रि में निरीक्षण करने पहुँचे तो देखा कि मामा और सैनिक सो रहे हैं तथा प्राचीर निर्माण का कार्य रुका हुआ है। ऐसी स्थिति देखकर लाचित को बहुत क्रोध आया। देश रक्षा में ऐसी लापरवाही उन्हें सहन नहीं थी। उन्होंने ***''देखोतकोई मोमाई डांगोर नोहोय''*** (अर्थात् देश से मामा बड़ा नहीं है)कहकर तलवार से मामा का सिर धड़ से अलग कर दिया।

यह दृश्य देखकर सभी सैनिक तुरंत प्राचीर निर्माण में दोगुने उत्साह से जुट गए। सुबह होने तक प्राचीर बन कर तैयार थी।

कहा जाता है कि लाचित के चेहरे पर इतना तेज था कि कोई भी उन्हें आंख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं कर पाता था।

लाचित ने शिवाजी की तरह कई बार चतुराई और कूटनीति से मुगलों को छकाया तथा मुगलों की रणनीति असफल की। छापामार युद्ध प्रणाली, मनोवैज्ञानिक युद्ध तथा युद्ध में जासूसों का प्रयोग किया। प्रसिद्ध इतिहासकार सूर्य कुमार भुइयां ने उन्हें 'पूर्वोत्तर भारत का शिवाजी' कहा है।

असम के पूर्व राज्यपाल श्री एसके सिन्हा ने अपनी पुस्तक 'मिशन असम' में लिखा है ''महाराष्ट्र और असम ने मध्ययुग में दो महान सैन्य नेताओं छत्रपति शिवाजी तथा लाचित बोरफूकन को जन्म दिया। दोनों महान योद्धाओं में कई समान विशेषताएं थीं। अपनी भूमि और लोगों के प्रति दोनों का प्यार तथा खतरों का सामना करने का अटूट संकल्प एक सा था। शिवाजी और लाचित दोनों में शाश्वत देशभक्ति, ऐतिहासिक गलतियों को ठीक करने का संकल्प तथा एक विशाल साम्राज्य के लिए आवश्यक साहस था।''

असम सरकार ने सराईघाट युद्ध में असम की विजय तथा लाचित की वीरता को सम्मान देने के लिए सन् 2016 में गुवाहाटी में एक 'युद्ध स्मारक' का निर्माण करवाया है। लाचित बोरफूकन के जन्म दिन 24 नवम्बर को 'लाचित दिवस' घोषित किया गया है।

भारतीय सेना की 'राष्ट्रीय प्रतिरक्षा अकादमी' (आईएनए) प्रतिवर्ष अपने सर्वोत्तम कैडेट (प्रशिक्षु सैन्य छात्र) को 'लाचित बोरफूकन स्वर्ण पदक' से सम्मानित करती है।

विगत 9 मार्च, 2024 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने असम के जोरहाट जिले के होलोंगापार में लाचित बोरफूकन की एक 125 फीट ऊँची कांस्य प्रतिमा का अनावरण किया था।

मुगल आक्रांताओं से उत्तर-पूर्व भारत भूमि की रक्षा करने वाले वीर योद्धा लाचित का जीवन और व्यक्तित्व शौर्य, साहस, स्वाभिमान, समर्पण और राष्ट्रभक्ति का पर्याय कहा जा सकता है। ■ *(आर.एस.अग्रवाल)*

जागरण पत्रिका के जागरूक वितरक

पाथेय कण पत्रिका को घर-घर पहुंचाने के कार्य में व्यक्तिशः लगे कार्यकर्ताओं ने जो बताया, आप भी जानेंगे तो आनन्दानुभूति अवश्य होगी-

कोटा ग्रामीण के कैप्टन रामसहाय (सेवानिवृत्त) अपने तीन साथियों के साथ मिलकर 60 पुस्तकें बांटते हैं। प्रमोद जी मध्य प्रदेश सीमा पर अध्यापक लगे होने के कारण 52 पत्रिकाएं वहां बांटते हैं। नए सदस्य बनाने से पहले कुछ पुरानी किताब भी वे उनको देते हैं। वे सेवा बस्ती में तथा बड़े-बुजुर्गों को पुस्तक पढ़ने को देते हैं। ट्रेन यात्रा के दौरान भी वे यात्रियों को पाथेय कण पढ़ने को देते हैं।

झोटवाड़ा के जयप्रकाश जी का कहना है कि उनके पाठकों में एक 75 वर्षीय वृद्ध माता जी हैं जो 10 लोगों को पत्रिका पढ़वाकर अपने पास संग्रह करके रखती हैं।

अम्बाबाड़ी (स्वस्तिक भवन) कार्यालय प्रमुख रामनिवास जी ने करीबन 1100 सदस्य बनाए हैं तथा वितरकों के घर पर बंडल रखकर आते हैं उनका मानना है कि यही एक पत्रिका है जो समाज में चेतना पैदा करती है।

जयपुर महानगर के विद्याधर भाग में सर्वाधिक सदस्य हैं। भाग के शारीरिक प्रमुख रामबाबू जी हर बार अपनी केन्द्रीय शाखा बदलकर सदस्य बनाते हैं तथा वहां की पूर्व व्यवस्था में विधिवत वितरण करवाते हैं। उनका मानना है कि यह पूरे परिवार की पत्रिका है तथा इतने कम मूल्य में अन्य पत्रिकायें उपलब्ध नहीं हैं।

जोधपुर के नरेन्द्र सिंह जी पूरे शहर के बंडल बनाकर दिन भर में वितरकों को देकर आते हैं। सरस्वती नगर में यहाँ की सबसे सघन सदस्यता है। यहाँ करीब 60 लोगों की टोली मिलकर अपने पाठकों तक पत्रिका पहुँचाती है। पाठकों और वितरकों के बीच बड़े ही मधुर संबंध हैं सभी लोग पत्रिका का इंतजार करते हैं, नहीं मिलने पर फोन करते हैं।

ये संस्मरण पिछले दिनों पाथेय कण के वितरण में लगे कार्यकर्ताओं (वितरकों) की बैठक में आए। ऐसी बैठकें जोधपुर के सरस्वती नगर, कोटा महानगर तथा जयपुर के विद्याधर नगर में आयोजित की गई थीं। इन बैठकों में संघ के अ.भा.जागरण पत्रिका प्रमुख श्री प्रेम कुमार ने उपस्थित रहकर कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया।

प्रेम कुमार जी ने कहा कि इस कार्य में महिलाओं की सहभागिता अधिक बढ़ाने की जरूरत है।

महिला सुरक्षा पर कोई समझौता नहीं, त्वरित न्याय की आवश्यकता

संवैधानिक आरक्षण का समर्थन, राष्ट्र प्रथम के पक्षधर

संघ की समन्वय बैठक सम्पन्न

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने कहा है कि महिला सुरक्षा के मामले में कोई समझौता नहीं होना चाहिए। पालक्काड़ (केरल) में आयोजित तीन दिवसीय संघ समन्वय बैठक के दौरान इस विषय पर व्यापक चर्चा की गई। संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख श्री सुनील आंबेकर ने 2 सितम्बर, 2024 को संघ प्रेरित 32 संगठनों की समन्वय बैठक के समापन दिवस पर एक प्रेसवार्ता के दौरान कहा कि चर्चा विशेष रूप से बंगाल में एक युवा महिला डॉक्टर से जुड़े बलात्कार और हत्या के मामले के संदर्भ में हुई।

त्वरित एवं समयबद्ध न्याय की आवश्यकता

श्री आंबेकर ने कहा कि महिलाओं के विरुद्ध अपराधों में त्वरित और समयबद्ध न्याय की आवश्यकता है। प्रभावी कानूनी व्यवस्था के साथ ही सरकार को सतर्क व सक्रिय होना चाहिए और यदि आवश्यक हो तो कानून को मजबूत किया जाना चाहिए। बैठक में कानूनी ढांचे को मजबूत करने, समाज में जागरूकता बढ़ाने, पारिवारिक स्तर पर और शिक्षा के माध्यम से मूल्यों को बढ़ावा देने, आत्मरक्षा कार्यक्रमों और डिजिटल सामग्री से संबंधित मुद्दों विशेषकर ओटीटी प्लेटफार्मों पर महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। उन्होंने कहा कि समाज की प्रगति में महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण है।

472 सम्मेलनों में 6 लाख महिलाओं की भागीदारी

पिछले वर्ष, महिलाओं को सशक्त बनाने और सामाजिक जीवन में उनकी भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से, आरएसएस से प्रेरित संगठनों में काम करने वाली महिलाओं ने सभी राज्यों में जिला केंद्रों पर सामूहिक रूप से महिला सम्मेलन आयोजित किए। 472 सम्मेलनों में लगभग 6 लाख महिलाओं ने भाग लिया। बैठक में इन सम्मेलनों की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जो राष्ट्रीय जीवन में महिलाओं की उन्नति में एक मील का पत्थर है। बैठक में अहिल्याबाई त्रि-शताब्दी वर्ष समारोह से संबंधित गतिविधियों की भी समीक्षा की गई। श्री आंबेकर ने बताया कि रानी दुर्गावती के 500 वर्ष के जन्म शताब्दी समारोह को मनाने का भी निर्णय लिया गया।

संवैधानिक आरक्षण के प्रावधानों का समर्थन

जाति जनगणना और आरक्षण पर प्रश्नों का उत्तर देते हुए श्री आंबेकर ने स्पष्ट किया कि आरएसएस ने हमेशा संवैधानिक आरक्षण के प्रावधानों का समर्थन किया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जाति जनगणना सहित डेटा का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों का कल्याण सुनिश्चित करना होना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि जाति जनगणना के मुद्दे का प्रयोग केवल चुनावी लाभ के लिए नहीं किया जाना चाहिए।

बांग्लादेश में हिंदू उत्पीड़न

बैठक में बांग्लादेश में हिन्दुओं और अन्य अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न के प्रचलित मुद्दे पर भी चर्चा हुई। विभिन्न संगठनों ने इस मुद्दे पर अपनी चिंता व्यक्त की। बैठक में, इस मुद्दे की अंतरराष्ट्रीय प्रकृति को देखते हुए भारत सरकार से इस मामले को कूटनीतिक रूप से आगे बढ़ाने की अपेक्षा जताई गई। गुजरात के कच्छ में सीमा सुरक्षा से जुड़े मुद्दों और तमिलनाडु में कन्वर्जन के प्रयासों पर चिंता प्रकट करते हुए इस पर भी चर्चा की गई।

→

बैठक में उपस्थित विविध संगठनों के प्रतिनिधिगण

पंच परिवर्तन

श्री आंबेकर ने बताया कि संघ शताब्दी वर्ष के संबंध में, सामाजिक परिवर्तन के लिए पांच सूत्री कार्य योजना तैयार की गई है। संघ से प्रेरित सभी संगठन पंच-परिवर्तन यथा, सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, जीवन के हर क्षेत्र में स्व की स्थापना और नागरिक कर्तव्यों को विकसित करने के मुद्दों से संबंधित कुछ जमीनी गतिविधियां करेंगे। योजना का उद्देश्य एक सर्व-समावेशी पहल होना है, जो समाज के हर वर्ग तक पहुंचे।

राष्ट्र प्रथम का सिद्धांत

पत्रकारों के एक प्रश्न के उत्तर में श्री आंबेकर ने कहा कि आरएसएस अन्य विविध क्षेत्र संगठनों के साथ मिलकर 'राष्ट्र प्रथम' को मूल सिद्धांत के रूप में लेकर काम करता है। यदि किसी मुद्दे पर अलग-अलग राय होती है, तो उसे राष्ट्र हित के आधार पर सुलझाया जाता है। मणिपुर मुद्दे पर उन्होंने कहा कि संघ के सरसंघचालक पहले ही अपनी राय व्यक्त कर चुके हैं। संगठन का दृष्टिकोण यह है कि सरकारी तंत्र को हिंसा नियंत्रित कर शांति स्थापित करनी चाहिए। हम उस संबंध में हुई प्रगति पर दृष्टि रख रहे हैं और आशा है कि जल्द ही स्थायी शांति स्थापित होगी।

वक्फ बोर्ड का कामकाज

वक्फ बोर्ड के कामकाज को लेकर कुछ मुस्लिम संगठनों द्वारा कई शिकायतें मिली हैं। ऐसे में कानून की समीक्षा करने में कोई बुराई नहीं है। संयुक्त संसदीय समिति द्वारा इस मुद्दे पर विचार करना एक स्वागत योग्य कदम है। विभिन्न संगठन इस संबंध में अपना प्रतिनिधित्व दे सकते हैं। प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान उत्तर केरल प्रांत संघचालक एडवोकेट केके बलराम, अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख प्रदीप जोशी और नरेंद्र कुमार भी उपस्थित थे। पालक्काड के अहिल्या परिसर में तीन दिवसीय समन्वय बैठक का समापन सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत के समापन भाषण के साथ हुआ। ▪ (पाथेय डेस्क)

माता सावित्री

माता सावित्री मद्रदेश के राजा अश्वपति की इकलौती कन्या थी। सावित्री अत्यधिक रूप-गुण-सम्पन्न और धर्मपरायण थी। राजपुत्री होते हुए भी सावित्री ने अपने विवाह के लिए एक निर्धन लकड़हारे सत्यवान को चुना, जो ''यथा नाम तथा गुण'' अत्यन्त सत्यनिष्ठ और सदाचारी युवक था। सत्यवान वास्तव में शाल्वदेश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र था, जो राज्यविहीन हो जाने के कारण परिवार सहित जंगल में गौतम ऋषि के आश्रम में रह रहे थे।

कुछ दिनों बाद महर्षि नारद आए और उन्होंने एक वर्ष में ही सत्यवान की अकाल मृत्यु हो जाने की बात बताई। सुनकर अश्वपति बहुत चिन्तित हुए और सावित्री से किसी अन्य व्यक्ति से विवाह करने को कहा। किन्तु सावित्री अपने निर्णय पर अटल रही और राजमहल का सुख-वैभव त्यागकर आदर्श पत्नी के रूप में सत्यवान के साथ वन में रहने लगी।

निर्धारित समय पर जब यमराज सत्यवान के प्राण लेकर जाने लगे तो सावित्री उनके पीछे-पीछे चल पड़ी और सत्यवान के प्राण लौटाने की प्रार्थना करने लगी। यमराज द्वारा बार-बार मना कर देने पर भी जब उसने अपना सत्याग्रह नहीं छोड़ा तो यमराज ने सत्यवान को पुनर्जीवित करने को छोड़कर अन्य कोई भी वरदान मांगने का प्रस्ताव रखा। यह सावित्री के दृढ़ संकल्प के साथ उसके बुद्धि चातुर्य की भी परीक्षा थी। महासती सावित्री इस परीक्षा में भी उत्तीर्ण हुई। सावित्री ने यमराज से सौ पुत्रों की प्राप्ति के साथ-साथ अपने सास-ससुर की नेत्र ज्योति ठीक करने और नष्ट हुए साम्राज्य को पुनः प्राप्त करने का वरदान मांगा। विवश होकर यमराज को सत्यवान के प्राण लौटाने पड़े। उन्होंने सावित्री को सभी वरदान भी प्रदान कर दिए।

इस महान नारी की स्मृति स्वरूप ज्येष्ठ मास की अमावस्या को वट सावित्री व्रत किया जाता है। इस पर्व पर स्त्रियाँ अपने पति की लंबी आयु के लिए व्रत रखती हैं तथा वट वृक्ष के नीचे बैठ कर सावित्री-सत्यवान की पावन कथा सुनती हैं।

सावित्री की कथा अपने जीवनसाथी के प्रति एकनिष्ठ प्रेम और अटूट सम्बन्धों की कथा है। पति-पत्नी का ऐसा अखण्ड प्रेम, जिसे संसार की कोई शक्ति अलग नहीं कर सकी। जिसने अपने सतीत्व से साक्षात यमराज को भी पराजित कर अपने पति के जीवन की रक्षा की, उस माता सावित्री का महान सती नारियों में सर्वोच्च स्थान है।

– इंदुशेखर 'तत्पुरुष'

मदरसे में चल रहा था जाली नोटों का छापाखाना

राष्ट्रभक्त बनाने वाले संगठन को बताया जा रहा था आतंकी

महाकुंभ के दौरान करोड़ों रुपये खपाने की थी तैयारी

बीती 28 अगस्त को अतरसुइया (प्रयागराज) स्थित मदरसा जामिया हबीबिया मस्जिद-ए-आजम से बड़ी संख्या में जाली नोट व छापने के उपकरण बरामद किए गए। यह मदरसा मस्जिद परिसर में संचालित था। इस रैकेट को मदरसे का प्रिंसिपल (मौलवी) तफसीरूल आरीफीन चला रहा था। उक्त मामले में जाली नोट बनाने में सहयोग करने वाले इसी मदरसे के छात्र रहे जाहिर खान, साहिद व अफजल (सभी की उम्र 18-25) को गिरफ्तार किया गया है।

आपत्तिजनक साहित्य की भरमार

प्रयागराज डीसीपी शहर श्री दीपक भूकर ने बताया कि मदरसा प्रिंसिपल के कक्ष में आरएसएस को लेकर पढ़ाया जा रहा आपत्तिजनक साहित्य और तस्वीरें भी मिली हैं जिनमें उसे देश का सबसे बड़ा आतंकी संगठन बताया गया है। प्राप्त पुस्तक के लेखक महाराष्ट्र के पूर्व पुलिस महानिरीक्षक एसएम मुशर्रफ हैं।

उल्लेखनीय है कि मुशर्रफ महोदय ने पुस्तक में मुम्बई के 26/11 (2008) हमले को हिंदू अटैक बताया है, साथ ही मालेगांव ब्लास्ट, समझौता एक्सप्रेस जैसे आतंकी हमलों में आरएसएस का हाथ होना बताया है।

महाकुंभ में खपाने की थी तैयारी

डीसीपी भूकर के अनुसार पकड़े गए चरमपंथी 100-100 के नोट ही छाप रहे थे जिससे उन्हें आसानी से बाजार में चलाया जा सके। पिछले तीन माह में इन्होंने लगभग 6 लाख रुपये के जाली नोट स्थानीय बाजार में खपा दिये थे। जनवरी, 2025 में प्रयागराज में होने वाले महाकुंभ के दौरान लगभग 2 करोड़ से अधिक जाली नोटों को खपाने की योजना थी।

अवैध मदरसे

पहली सितम्बर को बदायूं के गांव मूसाझाग में अवैध तरीके से मदरसा बनवाया जा रहा था। ग्रामीणों की शिकायत पर अवैध मदरसे को बुलडोजर से ध्वस्त करा दिया गया। मूसाझाग थाने से लगभग एक किमी दूर बनी मस्जिद भी पंचायत की जमीन पर अतिक्रमण कर बनाई जा रही थी। उल्लेखनीय है कि हिंदू जागरण मंच के पदाधिकारियों के साथ ग्रामीणों ने उक्त अवैध मदरसे का निर्माण रुकवाने के लिए विरोध-प्रदर्शन किया था। ■ *(मनोज गर्ग)*

गणेश चतुर्थी जुलूस व पंडाल पर पथराव

सर्व हिंदू समाज ने किया थानों का घेराव

गुजरात के गृहमंत्री ने रातभर में पत्थरबाजों को ढूंढवाकर कराया गिरफ्तार

तथाकथित कतिपय शांतिदूतों द्वारा हिंदुओं के धार्मिक जुलूसों पर पथराव की घटनाएं अभी भी सामने आती रहती हैं। 8 सितम्बर को मध्य प्रदेश के रतलाम में भगवान गणेश की मूर्ति ले जा रहे जुलूस पर अराजक तत्वों ने पथराव कर दिया।

परिस्थितियों में इतना बदलाव अवश्य आया है कि अब सर्व हिंदू समाज ऐसे मामलों में सामूहिक प्रतिकार करने लगा है। रतलाम में भी लगभग 500 लोगों ने स्टेशन रोड थाने का घेराव किया तथा दोषी व्यक्तियों को तुरंत गिरफ्तार करने की मांग की।

सूरत में गणेश पंडाल पर पथराव, 33 गिरफ्तार

गुजरात के सूरत में गणेश उत्सव के दौरान मुस्लिम समुदाय के अराजक तत्वों ने पंडाल पर पथराव किया। इसके सूचना मिलने पर सर्व हिंदू समाज के हजारों लोग इकट्ठे हो गए तथा विरोध प्रदर्शन करते हुए थाने का घेराव किया। दोबारा पथराव होने पर प्रदर्शन हिंसक हो जाने के समाचार हैं। इस दौरान दोनों धर्म के लोगों के बीच झड़प भी हुई। पुलिस ने पथराव में संलग्न 33 लोगों को गिरफ्तार किया है।

गुजरात के गृहमंत्री हर्ष संघवी ने गणेश पंडाल पर पत्थरबाजी की घटना को गंभीरता से लेते हुए पुलिस को आदेश दिया था कि सूरज की पहली किरण से पहले पत्थर फेंकने वाले सभी असामाजिक लोग गिरफ्तार होने चाहिए। यही हुआ। कुछ पत्थरबाजों ने स्वयं को दरवाजे पर ताला लगाकर छुपाया हुआ था। उन्हें ताला तोड़कर गिरफ्तार किया गया। पत्थरबाजों को पकड़ने के लिए ड्रोन और सीसीटीवी के विजुअल्स का उपयोग किया गया।

रायपुर में प्रतिमा तोड़ी

मध्यप्रदेश के रायपुर में गणेश चतुर्थी के एक दिन पूर्व 2 अराजक युवकों ने पंडाल में रखी गणेश प्रतिमा को तोड़ दिया। घटना के बाद हिंदू संगठनों ने आजाद चौक थाने का घेराव किया। पुलिस द्वारा आरोपियों को गिरफ्तार करने की सूचना है। अराजक तत्वों द्वारा अन्य कई जगहों पर ऐसी निकृष्ट हरकतें करने के समाचार आ रहे हैं। ऐसे तत्वों को समझ जाना चाहिए कि सर्व हिंदू समाज अब जाग गया है और तीव्र प्रतिकार करेगा।

अमृता देवी प्रकृति संवर्धन अभियान

मातृशक्ति द्वारा प्रत्येक गांव में 100 पौधे लगाने का संकल्प

एक वर्ष पूर्व लगाए गए पौधों का मनाया जन्मोत्सव

राजस्थान के विभिन्न स्थानों पर पर्यावरण संरक्षण करने के उद्देश्य से अमृता देवी प्रकृति संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के अंतर्गत नीम, पीपल, आंवला और गुलमोहर जैसे विभिन्न प्रकार के पौधे मातृशक्ति द्वारा लगाए जा रहे हैं।

काजड़ा गांव (झुंझुनूं) : बीती 27 अगस्त को काजड़ा गांव (झुंझुनूं) में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया, जहां सैकड़ों महिलाओं और बालिकाओं को पौधे वितरित किए गए। जिनका रोपण कर मातृशक्ति ने संकल्प लिया कि वे इनका पालन-पोषण अपने बच्चों और भाई-बहनों की तरह करेंगी, ताकि ये पौधे बड़े होकर एक हरे-भरे जंगल का रूप ले सकें। काजड़ा की तरह चंद्रग्रह गांव, रतनपुर गांव, सुलेमानपुरा गांव, धनपतपुरा गांव में भी इसी प्रकार के कार्यक्रम अगस्त माह में हुए।

प्रताप नगर (सांगानेर) : बीती 4 सितम्बर को संपन्न कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं ने एक ही दिन में 1 हजार पौधे लगाकर उनके पालन-पोषण का संकल्प लिया।

नेला तालाब (उदयपुर) : बीती 28 अगस्त को सम्पन्न कार्यक्रम में एक वर्ष पूर्व नेला तालाब पर लगाए गए सघन वन के पौधों का जन्मोत्सव मनाया गया। इसके पश्चात् मेला तालाब पर घूमने आने वाले आमजन के साथ मिलकर नेला तालाब किनारे पौधारोपण किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने कहा कि पेड़ों का जन्मदिन मनाना एक अच्छी शुरुआत है, यह पहल पौधों के प्रति जिम्मेदारी दर्शाती है। सिर्फ पौधे लगाना ही पर्याप्त नहीं उनकी देखभाल भी आवश्यक है। हम अधिक से अधिक पौधारोपण करें, जल का संरक्षण करें और पॉलीथीन का उपयोग करना बंद करें। हम सभी अपने जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगाँठ के पश्चात् अगले वर्ष उसका जन्मदिन मनाने का संकल्प लें।

अभियान की विशेष बात यह है कि लगाए गए पौधों को गूगल लोकेशन के माध्यम से पंजीकृत किया गया और इसकी जानकारी एक विशेष एप पर अपलोड की गई जिससे लगाए गए पौधों की देखभाल और विकास की निगरानी सुनिश्चित हो सके।

उल्लेखनीय है कि खेजड़ली गांव की अमृता देवी विश्नोई जिन्होंने वर्ष 1730 में पेड़ों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी, उनके बलिदान को स्मरण करते हुए, इस अभियान का नाम 'अमृता देवी प्रकृति संवर्धन' रखा गया है। ■

सघन वृक्षारोपण आवश्यक

हम पौधारोपण केवल फोटो खिंचवाने के लिए न करें। आज रोपा हुआ पौधा जीवित रहे, इतनी चिंता करना हमारा संकल्प होना चाहिए। मातृशक्ति अपने घरों के आगे अपने नाम से न्यूनतम एक वृक्ष लगाकर उसको पालने और हर वर्ष उसका जन्मदिन मनाने का संकल्प ले। देश हमें सब कुछ देता है, हम भी देश को देना सीखें। हम केवल लेते रहे और देने की दिशा मे कोई प्रयास नहीं हो तो यह कितने दिन चलेगा? एक दिन प्रलय को आना ही है। वायनाड इसका प्रत्यक्ष और ताजा उदाहरण है।

पिछले 20 वर्षों में वनों की जिस प्रकार कटाई हुई है, वह निश्चित ही परेशान करने वाला विषय है। वृक्षारोपण कर इस परिदृश्य को बदलना होगा, जिसमें हम सब की सक्रिय भूमिका होनी चाहिए, विशेषकर उपस्थित मातृशक्ति की। अमृता देवी पर्यावरण संरक्षण की प्रतीक हैं और इस दिशा में काम करने वाले लोगों की प्रेरणास्रोत। ऐसे ही उपस्थित मातृशक्ति अपने-अपने क्षेत्र में सघन वृक्षारोपण कर इस कार्य को आगे बढ़ने का कार्य बेहतर तरीके से कर सकती हैं और देश में कई स्थानों पर ऐसा कर भी रही हैं।

-निंबाराम, *क्षेत्र प्रचारक, राजस्थान (4 सितम्बर, प्रताप नगर, सांगानेर)*

नाई का कर्म करने वाले किशोर जी ने
घुमंतू छात्रों के लिए दिया ढाई करोड़ का भवन

दूसरों के बाल काटने अर्थात् नाई का कार्य करने वाले श्री किशोर एवं उनकी पत्नी लावण्या जी ने अपने जीवन भर की बचत दो करोड़ पचास लाख रुपयों की लागत से एक भवन बनवाकर घुमंतू समाज कार्य के लिए समर्पित किया है।

इस तीन मंजिला भवन में 'घुमंतू समाज के छात्रों के लिए छात्रावास चलाया जाएगा। किशोर जी का जन्म सामान्य परिवार में हुआ था। उनकी इच्छा थी कि वे दरिद्र लोगों की सेवा हेतु कुछ करें। उनकी पत्नी ने इस कार्य में उनका पूरा सहयोग दिया।

ऐसे अनुकरणीय कार्य के लिए उनका सम्मान संघ की घुमंतू कार्य के लिए चल रही अखिल भारतीय स्तर के बैठक (भाग्यनगर-हैदराबाद) में किया गया। संघ के अ.भा.सह सम्पर्क प्रमुख श्री सुनील देशपांडे ने किशोर जी व लावण्या जी को सम्मानित करते हुए कहा कि उनका कार्य समाज के लिए समर्पण की प्रेरणा देने वाला है। भाग्यनगर बैठक में देश के सभी प्रांतों के घुमंतू कार्य के प्रांत संयोजक-सह संयोजक आए थे। अ.भा. घुमंतू कार्य प्रमुख श्री दुर्गादास भी बैठक में उपस्थित थे।

न्यास के प्रयासों से घुमंतू समाज को मिलेगी छत

घुमंतू उत्थान न्यास के प्रयासों के चलते अब राजस्थान सरकार 2 अक्टूबर,2024 से घुमंतू समाज के परिवारों को नि:शुल्क आवासीय पट्टा देने का अभियान शुरू करेगी। इसके लिए पहले सर्वे करवाया जाएगा। इसके अतिरिक्त प्रधानमंत्री आवासीय योजना में मकान बनाने के लिए भी रुपए दिए जायेंगे।

उल्लेखनीय है कि घुमंतू समाज वह समुदाय है, जो स्थायी रूप से एक जगह नहीं रहता।

देश की जनसंख्या का लगभग 10 प्रतिशत यानि 13 से 14 करोड़ लोग घुमंतू समाज से हैं। राजस्थान में इनकी संख्या लगभग 60 लाख है। एक अनुमान के अनुसार इनमें से 78 प्रतिशत के पास न तो रहने को घर है और न जीवन को संवारने के अन्य मूलभूत संसाधन।

संक्षिप्त समाचार

विश्व की महापाषाण संरचनाओं में साम्यता

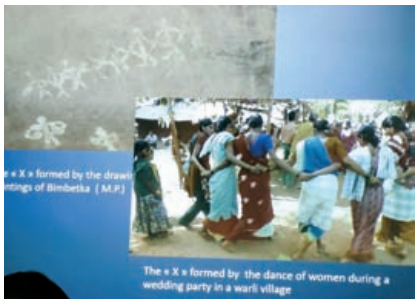

फ्रांसीसी विद्वान प्रो. सर्ज ले गुर्रीक ने पाथेय भवन में दिए अपने व्याख्यान में फ्रांस के गांव ब्रिटनी एवं मध्यप्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों के पाषाणों पर अंकित चित्र रेखांकन व संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए कहा कि विश्व की महापाषाण संरचनाओं में साम्यता दिखाई देती है। इनमें आध्यात्म के दर्शन भी होते हैं। इस विषय पर और अध्ययन की आवश्यकता है।

कार्यक्रम का आयोजन 5 सितम्बर को अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम (एबीवीकेए) तथा अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र (आईसीसीएस) द्वारा किया गया था। मेजर सुरेन्द्र नारायण माथुर (से.) ने विश्व के कई क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति के चिह्न पाए जाने की चर्चा की। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में पत्रकार व प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

जम्मू-कश्मीर के
वाल्मीकि समाज के लोग
पहली बार करेंगे मतदान

जम्मू-कश्मीर में लगभग 10 हजार लोग वाल्मीकि समाज के हैं जिन्हें अनुच्छेद 370 एवं 35ए के कारण न केवल विधानसभा के लिए मतदान से वंचित रखा गया, वरन् उनके युवा भी सरकारी नौकरी के लिए पात्र नहीं माने गए थे। अब यह अनुच्छेद रद्द कर दिए जाने के कारण वाल्मीकि समाज के लोग विधान सभा के लिए पहली बार वोट डाल रहे हैं। वाल्मीकि समाज सभा के अध्यक्ष घारू भट्टी ने बताया कि ''आजाद भारत में पहली बार हमें विधानसभा के लिए मतदान का अधिकार मिला है। इसका पूरा श्रेय पीएम नरेन्द्र मोदी को जाता है।''

गाय के गोबर से जापान में चला जहाज, राकेट उड़ाने की है तैयारी

गाय के पंचगव्यों में से एक 'गोबर' को अब तक सिर्फ खेतों में खाद व कंडों के रूप में काम में लिया जाता था, लेकिन अब दुनियाभर में गाय के गोबर की और अधिक उपयोगिता भी सिद्ध हो चुकी है। विश्व में बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए गाय का गोबर बहुत कारगर साबित हो रहा है। ताजा जानकारी के अनुसार जापान में गोबर की ऊर्जा से पानी में चलने वाले जहाज का सफल परीक्षण किया गया है।

जापान गाय के गोबर का प्रयोग रॉकेट के ईंधन के रूप में करने की भी तैयारी कर रहा है। जापान की स्पेस इंडस्ट्री ने एक प्रोटोटाइप (प्रारंभिक मॉडल) रॉकेट इंजन का परीक्षण किया है, जिसका ईंधन गाय के गोबर से तैयार किया गया है। इस रॉकेट को बायो मीथेन से उड़ाया गया है, जो गोबर से निकलने वाली एक गैस है। 'इंटरस्टेलर टेक्नोलॉजीज' नाम की कम्पनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ताकाहिरो इनागावा के अनुसार इसमें प्रयुक्त बायो मीथेन पूरी तरह से दो स्थानीय डेयरी फार्मों में गाय के गोबर से उत्पन्न की गई थी। यह बहुत किफायती शुद्धता वाला ईंधन है। कंपनी का मानना है कि आने वाले समय में इस ईंधन का प्रयोग करके अंतरिक्ष में सैटेलाइट भी स्थापित किए जा सकेंगे।

ब्रिटेन के किसानों ने गोबर से बनायीं बैटरियां : ब्रिटेन में किसानों ने गाय के गोबर से ऐसा पाउडर तैयार किया गया है, जिससे बैटरियां बनाई गई हैं। गाय के एक किलोग्राम गोबर से किसानों ने इतनी बिजली तैयार की है कि उससे 5 घंटे तक वैक्यूम क्लीनर चलाया जा सकता है। ब्रिटेन के 'आर्ला' नाम की डेयरी ने इस बैटरी को 'काउ बैटरी' का नाम दिया है।

भारत में गोबर से बिजली बनाने का काम शुरू : छत्तीसगढ़ में गाय के गोबर से बिजली बनाए जाने की परियोजना अक्टूबर 2023 में शुरू की गई है। इस योजना के अंतर्गत ग्रामीणों से गोबर खरीद कर बिजली बनाई जा रही है।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, आदित्यपुर (झारखण्ड) की सहायक प्रोफेसर दुलारी हेंब्रम के अनुसार, गाय के गोबर और मूत्र से उत्पादित वैकल्पिक ऊर्जा (मीथेन) का प्रयोग अभी चार पहिया वाहन चलाने व बल्ब जलाने के लिए हो रहा है, लेकिन इससे निकलने वाली हाइड्रोजन गैस को उच्च कोटि के ईंधन के रूप में विकसित किया जा सकता है। इससे देश में बिजली की समस्या भी दूर हो सकती है।

ये समाचार उन लोगों की आंखें खोलने के लिए काफी है जो हिंदू संस्कृति का मजाक बनाते हैं और गाय को एक साधारण पशु मानकर इसका वध कर रहे हैं और गोबर को मात्र एक अपशिष्ट बता रहे हैं।

श्रद्धांजलि

रैवासा पीठाधीश्वर पूज्य राघवाचार्य जी महाराज का देवलोकगमन

राजस्थान के प्रख्यात संत एवं रामानंद संप्रदाय की अग्रदेवाचार्य पीठ के 17वें आचार्य स्वामी राघवाचार्य जी महाराज बीती 30 अगस्त को (हृदयघात से) देवलोकगमन कर गए। वे 71 वर्ष के थे। पूज्य राघवाचार्य जी रैवासा (सीकर) के ऐतिहासिक जानकी नाथ मंदिर के पीठाधीश्वर थे। यह वैष्णव संप्रदाय की प्राचीनतम पीठों में से है जहां लगभग चार दशक से निरंतर 'श्री सीताराम' नाम संकीर्तन गुंजायमान है। वेदांती उपाधि से विभूषित स्वामी जी वाराणसी के संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय से वेदांत विषय में गोल्ड मेडलिस्ट थे।

सनातन संस्कृति के संरक्षण हेतु आपने रैवासा में श्री जानकीनाथ वेद विद्यालय तथा श्री अग्रदेवाचार्य संस्कृत विद्यापीठ प्रारम्भ किया। इस वेद विद्यालय से शिक्षित कई युवा वर्तमान में देश की सेना में धर्मगुरु पद पर तो कई अन्य संस्थानों में कार्यरत हैं। रामानंद संप्रदाय का महत्वपूर्ण ग्रंथ 'विशिष्टाद्वैत सिद्धांत' के प्रकाशन का श्रेय भी आपको जाता है। आपके द्वारा लगभग 15 उत्कृष्ट ग्रंथों का प्रकाशन हुआ।

1984 में श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन से जुड़े और शिलापूजन, कारसेवा के दौरान प्रदेशभर में राममय वातावरण बनाते हुए मंदिर निर्माण तक आपने महत्ती भूमिका निभाई। आंदोलन के समय आप 9 दिन तक आगरा जेल में भी रहे। विश्व हिंदू परिषद् केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल के विशिष्ट सदस्य, राजस्थान धर्माचार्य परिषद् के प्रधान सचिव जैसे अनेकों पदों एवं हिंदू संगठनों से आप प्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहे। वर्ष 2005 में आप राजस्थान संस्कृत अकादमी के अध्यक्ष बने।

उल्लेखनीय है कि राघवाचार्य जी का जन्म उत्तर प्रदेश के हमीरपुर स्थित विरखेड़ा गांव में हुआ था। आपने 20 वर्ष की आयु में संन्यास ग्रहण कर सम्पूर्ण जीवन समाज सेवा, साहित्य सेवा, धर्म-संस्कार, नशा-मुक्ति व गो-सेवा को समर्पित किया। ऐसे तपनिष्ठ पूज्य संत को पाथेय कण परिवार श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

जयदेव पाठक जन्म शताब्दी

राजस्थान के वरिष्ठ प्रचारक स्व.जयदेव जी पाठक 22 वर्ष की उम्र में ही अध्यापक की नौकरी छोड़कर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्णकालिक प्रचारक बन गए थे। संघ कार्य के साथ ही उन्हें विद्या भारती और शिक्षक संघ का दायित्व दिया गया। 1924 की जन्माष्टमी को जन्मे जयदेव जी पाठक की जन्म शताब्दी पर राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) द्वारा बीती 25 अगस्त को जयपुर में एक बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्रद्धेय जयदेव जी पाठक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संबंध में वक्ताओं द्वारा प्रकट उद्गार यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं–

मुख्य वक्ता श्री कैलाश चंद (संघ की राजस्थान क्षेत्र कार्यकारिणी के सदस्य) : पाठक जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की उस देव दुर्लभ टोली के सदस्य रहे, जिन्होंने राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना, संस्कृति की रक्षा, विश्व शांति, वसुधैव कुटुंबकम्, समाज कल्याण और शिक्षकों व विद्यार्थियों के हित के लिए अपना तन, मन, धन अर्पित कर दिया। हमें व्यक्ति नहीं बल्कि उसके गुणों की पूजा करनी चाहिए और पाठक जी जैसे महापुरुषों के सद्गुणों को जीवन में उतारना चाहिए। कार्य की सिद्धि के लिए उपकरणों का महत्व नहीं है, व्यक्ति की साधना ही उसे परिणाम तक पहुंचाती है। अपने मन, बुद्धि और आत्मा को शुद्ध करके व्यष्टि, सृष्टि, समष्टि और परमेष्ठी चारों का एक दूसरे के साथ समन्वय कर व्यक्ति अपना सर्वांगीण विकास कर परम वैभव की स्थिति तक पहुंच सकता है। पाठक जी बाहर से कठोर परंतु आंतरिक मन से बहुत ही मुलायम व सुहृदय थे।

बजरंग प्रसाद मजेजी (मुख्य अतिथि) : हमारे आदर्श श्रद्धेय जयदेव जी पाठक का जन्म हिंडौन के फाजिलाबाद ग्राम में हुआ था। माता के जल्दी देहांत के बाद पिता के साये में उनका बाल्यकाल व्यतीत हुआ। पढ़ने में वे प्रारंभ से ही मेधावी रहे। बचपन से उनकी सर्वश्रेष्ठ गणितज्ञ बनने की इच्छा थी। परंतु भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रहने और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आने के बाद वे 1946 में अध्यापक की नौकरी छोड़कर संघ के पूर्णकालिक प्रचारक बन गए। जिला, विभाग प्रचारक, विद्या भारती में विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए 1954 में उन्होंने राजस्थान शिक्षक संघ की स्थापना की। उन्होंने कहा कि पाठक जी सदैव संगठन के विस्तार, कार्यकर्ता निर्माण, प्रवास, शिक्षक और विद्यार्थी हित, त्याग, मितव्ययता, पद, प्रशंसा से दूर आदि विभिन्न पहलुओं पर जोर देते थे।

रमेश चंद पुष्करणा, शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) के प्रदेश अध्यक्ष : पाठक जी संगठन की सदस्यता पर बहुत जोर देते थे। उन्हीं के विचार और आदर्शों के कारण आज हमारा संगठन लगभग सवा दो लाख से भी अधिक सदस्यों के साथ राजस्थान का सबसे बड़ा संगठन बन गया है। प्रभावी संकुल रचना के कारण आज हम इतनी सदस्यता निश्चित समयावधि में पूर्ण कर पाए।

पाठक जी कहते थे कि कोई संगठन तभी ठीक प्रकार से चलता है जब उसके सभी कार्यकर्ता संगठन में हुए निर्णयों के अनुसार आचरण करें। हमारे बीच किसी बात को लेकर मतभेद हो सकते हैं, मनभेद नहीं होने चाहिए क्योंकि हम सब भारत मां को परम वैभव तक पहुंचाने के एक ही राष्ट्रीय विचार को लेकर आगे बढ़ रहे हैं।

जयपुर

सफाईकर्मियों का सत्कार व सहभोज

श्री जानकी महिला मंडल, पार्श्वनाथ कॉलोनी, अजमेर रोड द्वारा वाल्मीकि समाज व वार्ड 64 में कार्यरत 35 सफाईकर्मियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम के बाद सभी सफाईकर्मी कॉलोनीवासियों के साथ सहभोज में शामिल हुए। (6 सितम्बर)

पेरिस पैरालंपिक में भारतीय खिलाड़ियों का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

पेरिस पैरालंपिक खेलों में भारतीय पैरालंपियनों ने ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए कुल 29 मेडल (7 गोल्ड, 9 रजत, 13 कांस्य) वैश्विक खेल मंच पर जीत कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

170 देशों में 18 वें स्थान पर रहते हुए भारत ने पैरालंपिक में अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है।

इंद्रप्रस्थ : वैभव सम्पन्न नगर

इंद्रप्रस्थ शहर को पांडवों ने बनाया और बसाया था। महाकाव्य महाभारत के अनुसार यह पांडवों की राजधानी थी। यह शहर यमुना नदी के किनारे स्थित था, जो भारत की वर्तमान राजधानी दिल्ली कहलाता है। प्रारंभ में यहां एक घना वन था जिसे खांडव कहा जाता था। इसी वन से इंद्रप्रस्थ की रचना हुई। दुर्योधन ने जब जिद करके हस्तिनापुर का राज्य प्राप्त किया, तब पांडवों को यह सघन वन क्षेत्र दिया गया था। पांडवों के समक्ष उस बीहड़ जंगल को एक नगर बनाने की चुनौती थी। भगवान कृष्ण के आह्वान पर विश्वकर्मा जी और मय दानव द्वारा अपनी अद्भुत वास्तुकला के सहारे इंद्रप्रस्थ को अकल्पनीय भव्यता प्रदान की गई। भव्य सभागार एवं प्रासादों से सुसज्जित यह नगरी इंद्र की अमरावती से कम नहीं थी। इसी कारण इसे इंद्रप्रस्थ नाम दिया गया था। इस शहर के सर्वश्रेष्ठ भाग में पांडवों का महल स्थित था। युधिष्ठिर ने यहां राजसूय यज्ञ किया था। इंद्रप्रस्थ को केवल महाभारत से ही नहीं जाना जाता है। पाली भाषा में लिखित बौद्ध ग्रंथों में इसका उल्लेख इंद्रपट्ट या इंद्रपट्टम के रूप में भी किया गया है।

दिवस

वायुसेना दिवस : आज से 92 वर्ष पूर्व भारतीय वायुसेना का आधिकारिक गठन 8 अक्टूबर, 1932 को किया गया था। भारतीय वायुसेना विश्व की चौथी (अमरीका,चीन व रूस के बाद) सबसे बड़ी वायुसेना है। इसका ध्येय वाक्य है- 'नभ: स्पृशं दीप्तम्'(आकाश को स्पर्श करने वाला देदीप्यमान) जो भगवद्गीता के 11वें अध्याय से लिया गया है।

08 अक्टूबर

विश्व डाक दिवस : 9 अक्टूबर

परफ्यूम, डिटर्जेंट, रूम स्प्रे, शैम्पू से एलर्जी का खतरा

सुगंध व स्वाद विकास केन्द्र, कन्नौज के निदेशक वीवी शुक्ला के अनुसार सिंथेटिक सुगंध में छह हजार से अधिक कार्बनिक रसायनों का प्रयोग होता है, जिससे सिरदर्द, अस्थमा, हृदय और तंत्रिका संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। सिंथेटिक परफ्यूम से एलर्जी के साथ प्रतिरक्षा प्रणाली पर भी असर हो सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार सुगंध में प्रयोग होने वाले सुगंधित रसायन त्वचा से होकर रक्त में जा सकते हैं जो कई स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकते हैं। इसलिए परफ्यूम का संतुलित उपयोग करना चाहिए।

घरेलू नुस्खा

- अमरूद की ताजा पत्तियों को पानी में उबालकर ठण्डा कर लें। इसमें स्वादनुसार सादा नमक मिलाएं और दिन में 2-3 बार कुल्ला करें। ऐसा करने से दांत दर्द में आराम मिलता है।

कुकिंग / किचन टिप्स

- भिंडी की सब्जी बनाते समय इसका चिपचिपापन दूर करने के लिए इसमें नींबू के रस की कुछ बूंदें मिला दें। ऐसा करने से भिंडी का चिपचिपापन एकदम चला जायेगा।

आओ संस्कृत सीखें-44

- **जैसा आप चाहते हैं वैसा।**
  यथा भवान् इच्छति तथा।

गीता- दर्शन

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि।।

यह आत्मा अव्यक्त है, यह आत्मा अचिन्त्य है और इसे विकार रहित कहा जाता है। इसलिए हे अर्जुन! इस आत्मा को उपर्युक्त प्रकार से जानकर तेरे द्वारा शोक करना उचित नहीं है। (02/25)

चुप संख्या ज्ञात करो

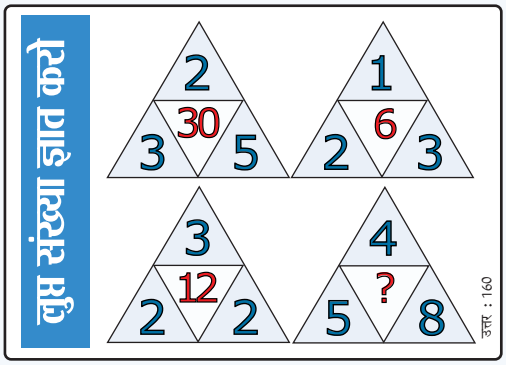

उत्तर : 160

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें- **सामान्य**- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. वानरराज बाली कहां के राजा थे?
2. भ्राता नकुल और सहदेव को जन्म देने वाली माता कौन थी?
3. शिव-ताण्डव स्तोत्र की रचना किसके द्वारा की गई है?
4. समुद्र मंथन के समय अमृत हाथ में लेकर कौन प्रकट हुए थे?
5. विजय नगर साम्राज्य की नींव रखने वाले महावीर कौन थे?
6. प्रसिद्ध गणितज्ञ आर्यभट्ट किस विश्वविद्यालय के प्राध्यापक रहे थे?
7. भारत की स्वदेशी तकनीक से निर्मित पहली पनडुब्बी का नाम क्या है?
8. जनरल जोरावर सिंह के नाम से डीआरडीओ ने कौन सा टैंक बनाया है?
9. नेपाल के नए प्रधानमंत्री के रूप में किसे नियुक्त किया गया है?
10. 'खर्ची पूजा' लोक त्योहार भारत के किस राज्य में मनाया जाता है?

उत्तर इसी अंक में...

कथा

सच्ची सेवा

कलकत्ता में फैले प्लेग की त्रासदी तथा प्रकोप से वहां हाहाकार मचा था। काल के कराल हाथों ने असंख्य लोगों की जीवन-लीला समाप्त कर दी। स्वामी विवेकानन्द ने अपनी साधना तथा उपासना छोड़ कर लोगों को बचाने का कार्य प्रारम्भ कर दिया।

एक व्यक्ति ने उनसे पूछा- ''महाराज! आपकी आराधना-वंदना का क्या होगा?'' स्वामी जी का उत्तर था- ''भगवान् की संतान मरणासन्न हों और मैं एक स्थान पर सुखासन की मुद्रा में उसका नाम जपता रहूँ, क्या तुम इसे ही उपासना समझते हो?'' प्रश्नकर्ता मौन, उनकी ओर देखता रह गया।

सेवा-कार्य के लिए पैसे का अभाव होने लगा तो स्वामी जी रामकृष्ण आश्रम की भूमि बेचने को तैयार हो गये। इस पर शिष्य ने पुन: प्रश्न किया- ''महाराज! क्या आप अपने गुरु का स्मारक बेचेंगे?''

विवेकानन्द ने बड़ी सरलता से उस शिष्य को समझाया-'' मठ और मन्दिर का स्थान मानव की भलाई के लिए होता है। यदि उनका उपयोग जनहिताय न हो तो वे निर्जीव पाषाण हैं। भले कार्यों में उपयोग से पत्थरों में भी भगवान् बोलने लगते हैं। यही सच्ची गुरु-सेवा और प्रभु-सेवा है।''

वर्ग पहेली

18 रंगों के नाम खोजिए

गे	जा	फि	रो	जी	बैं	साँ
रु	के	मु	धा	ग	व	सु
आ	स	मा	नी	ला	ल	न
ना	रि	स	ले	टी	भू	ह
रं	या	फे	खा	पी	का	रा
गी	चा	द	की	गु	ला	बी

उत्तर: नारंगी, गुलाबी, फिरोजी, बैंगनी, सिंदूरी, सलेटी, सुर्ख, पीला, काला, आसमानी, नीला, केसरिया, गेरुआ, सफेद, खाकी, सुनहरा, हरा, लाल

बाल प्रश्नोत्तरी - 63

जीतें पुरस्कार अब दूसरी और तीसरी बार भी

बाल मित्रों, 1 अगस्त का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 को प्रमाण-पत्र तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - **5 अक्टूबर, 2024**

1. महाराणा प्रताप की माता का नाम बताइए?
(क) जयवंताबाई (ख) लक्ष्मीबाई (ग) लाडीबाई (घ) विजयाबाई

2. प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने आपातकाल किस वर्ष में लगाया था?
(क) 1975 (ख) 1977 (ग) 1970 (घ) 1978

3. गायत्री देवी कहाँ के राजघराने की महारानी थीं?
(क) जोधपुर (ख) जयपुर (ग) जैसलमेर (घ) बाड़मेर

4. कारगिल युद्ध कुल कितने दिन तक लड़ा गया था?
(क) 80 दिन (ख) 84 दिन (ग) 75 दिन (घ) 82 दिन

5. भील प्रदेश की मांग के लिए राजस्थान के किस जिले में रैली हुई थी?
(क) बीकानेर (ख) भीलवाड़ा (ग) जयपुर (घ) बांसवाड़ा

6. विभाजन विभीषिका दिवस किस दिन मनाया जाता है?
(क) 10 अगस्त (ख) 12 अगस्त (ग) 14 अगस्त (घ) 20 अगस्त

7. किस मुस्लिम देश ने मोहर्रम पर प्रतिबंध लगाया है?
(क) पाकिस्तान (ख) अफगानिस्तान (ग) ईराक (घ) ईरान

8. बाबा विश्वनाथ की नगरी के नाम से कौन सा स्थान प्रसिद्ध है?
(क) वाराणसी (ख) हरिद्वार (ग) प्रयाग (घ) उज्जैन

9. किस शहर के मॉल में धोती पहनकर आने वाले किसान को रोका गया?
(क) बीजापुर (ख) मैसूर (ग) बेंगलुरु (घ) हुबली

10. जॉर्जिया मेलोनी वर्तमान में किस देश की प्रधानमंत्री हैं?
(क) जापान (ख) अमेरिका (ग) नेपाल (घ) इटली

समीकरण हल कीजिए

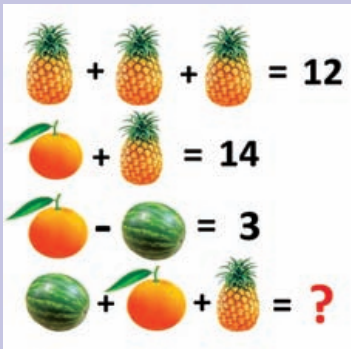

उत्तर : 7 + 10 +4 = 21

बाल प्रश्नोत्तरी-61 के परिणाम

प्रियंका पारुल प्रेमचंद मुस्कान लक्ष्य

1. प्रियंका पंवार, बिलाड़ा, जोधपुर
2. पारुल सैनी, राजपुरबड़ा, अलवर
3. प्रेमचंद जाखड़, सनावड़ा, बाड़मेर
4. मुस्कान पांचाल, बारां
5. लक्ष्य उपाध्याय, मुरलीपुरा, जयपुर
6. धैर्य पाराशर, जवाहर नगर, जयपुर
7. उत्कर्ष शर्मा, विज्ञान नगर, कोटा
8. डिम्पल, बावड़ी कल्ला, फलौदी
9. कृष्ण शर्मा, नायला, बस्सी
10. प्रिंस सेन, आसीन्द, भीलवाड़ा

सही उत्तर
1. (क)
2. (ख)
3. (ग)
4. (घ)
5. (क)
6. (क)
7. (ख)
8. (ख)
9. (ख)
10. (ख)

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी - 63)
(अपनी पासपोर्ट फोटो अवश्य वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( ) 3.( ) 4.( ) 5.( ) 6.( ) 7.( ) 8.( ) 9.( ) 10.( )

नाम...कक्षा..........पिता का नाम..

उम्र........... पूर्ण पता...

......................पिन.................मोबाइल...

जयपुर

चैतन्य भारत दौड़

हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती (राष्ट्रीय खेल दिवस) के अवसर पर क्रीड़ा भारती ने देशभर के जिला मुख्यालयों पर 'चैतन्य भारत दौड़' का आयोजन किया। जयपुर के कार्यक्रम में क्रीड़ा भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष गोपाल सैनी, राष्ट्रीय संगठन मंत्री प्रसाद महानकर व क्षेत्रीय संयोजक मेघ सिंह उपस्थित रहे। (29 अगस्त)

भवानी मंडी (झालावाड़)

स्वरोजगार शिविर

स्वावलंबी भारत अभियान के अंतर्गत् भारत विकास परिषद द्वारा स्वरोजगार शिविर का आयोजन। इस अवसर पर डॉ.राजकुमार मित्तल की पुस्तक ' हर युवा उद्यमी' का विमोचन भी किया गया। (31 अगस्त)

जयपुर

गर्भाधान संस्कार कार्यशाला

भारतीय अभ्युत्थान समिति के तत्वावधान में जयपुर के सवाई मानसिंह चिकित्सा महाविद्यालय में एक दिवसीय 'गर्भाधान संस्कार कार्यशाला' का आयोजन। गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर के पूर्व प्राचार्य डॉ.हितेश जानी ने संबोधित किया। अध्यक्षता संघ के क्षेत्र संघचालक डॉ. रमेश अग्रवाल ने की। (1 सितम्बर)

उदयपुर

आप्टे जी पर गोष्ठी

भारतीय इतिहास संकलन समिति उदयपुर इकाई की ओर से बाबा साहब आप्टे की 121वीं जयंती पर गोष्ठी का आयोजन। कार्यक्रम को ख्यातनाम इतिहासकारों ने सम्बोधित किया। (31 अगस्त)

चौंमू

विराट शक्ति संगम

विश्व हिंदू परिषद, चौंमू षष्ठीपूर्ति व स्थापना दिवस समारोह 'विराट शक्ति संगम' के रूप में मनाया गया। मुख्य वक्ता थे विहिप के राष्ट्रीय प्रवक्ता अमितोष पारीक। कार्यक्रम में संत प्रेमदास जी महाराज व सागरपुरी जी महाराज भी रहे। (1 सितम्बर)

जयपुर

नाद गोविंदम्

जयपुर प्रांत घोष दिवस के अवसर पर ऋषि गालव भाग द्वारा 'नाद गोविंदम्' का आयोजन। इस अवसर पर घोष पथ संचलन निकाला गया। संचलन के दौरान स्वयंसेवकों ने वादन के 22 प्रकार की रचनाओं की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता संघ के क्षेत्र प्रचारक थे। मुख्य अतिथि थे राजस्थान संगीत संस्थान के डॉ.विजेन्द्र गौतम। (26 अगस्त)

झालावाड़

प्रांतीय अधिवेशन

भारतीय किसान संघ का तीन दिवसीय प्रांतीय अधिवेशन झालावाड़ में आयोजित । (7,8 व 9 सितम्बर)

यह राष्ट्र पुनः अखंड होगा

▪ *भरत त्रिपाठी, देवगढ़*

हम भारत भू के आराधक
हम समरसता के संवर्धक
हम वैदिक धर्मधरा के हैं
'केशव' की परम्परा के हैं
हम 'माधव' के मानस वंशज
दोनों चक्षु हैं भगवा ध्वज
'मधुकर' के मधुर मनस्वी हैं
सेवा के परम तपस्वी हैं
'रज्जू भैया' के मतवाले
खंडित भूमि के हैं छाले
हम तेज 'सुदर्शन' का लेकर
हाथों में धर्म ध्वजा लेकर
निकले हैं पाप मिटाने को
भारत को स्वर्ग बनाने को
'मोहन' यह मार्ग प्रशस्त करें
भारत माँ को आश्वस्त करें
भक्ति का ज्वार प्रचंड होगा
यह राष्ट्र पुनः अखंड होगा

दो ही मार्ग हैं...

एक बच्चा दोपहर में नंगे पैर फूल बेच रहा था। लोग मोलभाव कर रहे थे। एक सज्जन ने उसके पैर देखे, बहुत दुःख हुआ। वह भागकर गया, पास ही की एक दुकान से जूते लेकर आया और कहा–बेटा! ये जूते पहन ले। लड़के ने फटाफट जूते पहने, बड़ा खुश हुआ और उस आदमी का हाथ पकड़ कर कहने लगा– आप भगवान हो। वह आदमी घबराकर बोला– नहीं... नहीं.. बेटा! मैं भगवान नहीं। फिर लड़का बोला... जरूर आप भगवान के मित्र होंगे। क्योंकि मैंने कल रात ही भगवान से प्रार्थना की थी कि भगवान जी मेरे पैर बहुत जलते हैं मुझे जूते लेकर दो। वह आदमी आंखों में पानी लिए मुस्कराता हुआ चला गया, पर वह जान गया था कि भगवान का मित्र बनना ज्यादा कठिन नहीं है।

ईश्वर ने दो ही मार्ग बनाए हैं–देकर जाओ या छोड़कर जाओ,–साथ लेकर जाने की कोई व्यवस्था नहीं है।

उत्तर : जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है?–1.किष्किन्धा 2. माद्री 3.लंकापति रावण 4. धन्वन्तरि 5. राय हरिहर 6. नालन्दा 7. एरोवाना 8. जोरावर 9. केपी शर्मा ओली 10. त्रिपुरा

रक्षाबंधन संदेश

।। वन्देमातरम ।।

दूरभाष 07970225872
व्हाट्सअप नं. 09926113826

भारतीय कुष्ठ निवारक संघ

डाक घर - श्री कात्रेनगर (चांपा) 495670, जिला जांजगीर-चांपा (छ.ग.)

नर सेवा नारायण सेवा- स्वामी विवेकानंद

दिनांक : 19.08.2024

परम आदरणीय आत्मीय बंधु, सविनय सादर प्रणाम।

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर प्रतिवर्षानुसार भारतीय कुष्ठ निवारक संघ की हम सभी बहिनों की मंगलकामनाएं स्वीकार कर हमें अनुग्रहित कीजिए।

एक कुष्ठ पीड़ित को बार–बार होने वाले घाव से शारीरिक पीड़ा होती है परन्तु समाज में व्याप्त भ्रांतियों से उपजे भय के कारण उनके साथ सामाजिक बर्ताव से उन्हें शारीरिक पीड़ा से कहीं ज्यादा मानसिक चोट पहुँचती है। कुष्ठ पीड़ित इस नारकीय जीवन से मुक्ति मिलने एवं समाज में स्वीकारोक्ति की आशा से साहसपूर्वक शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा सहन करता रहता है। कुष्ठ पीड़ितों की इस आशा को विश्वास में बदलना होगा और उनका मनोबल बनाए रखना होगा। अतः हमें समाज की मानसिकता में बदलाव लाने की जरूरत है। हमें इस रोग के लक्षणों एवं त्वरित उपचार की जानकारी के प्रचार करने के साथ समाज में व्याप्त भ्रांतियों के विरुद्ध जनजागरण की गति बढ़ानी होगी। अपनी मजबूत इच्छाशक्ति से प्रयास करने पर ही इस कठिन कार्य में हमें सफलता प्राप्त होगी। आप सभी बंधुओं ने इस कठिन कार्य में हम कुष्ठ पीड़ितों को निरंतर संवेदनशील हृदय से सहयोग दिया है। हमारी प्रार्थना है कि सदैव की भांति कुष्ठ रोग बाबत भ्रांतियों के विरुद्ध अपने इस 'कुष्ठ उन्मूलन के जनजागरण' कार्य में आत्मीयतापूर्वक सहयोग प्रदान कीजिए।

धन्यवाद । सभी को नमस्कार

(संस्था आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के अंतर्गत कर मुक्त है)
Website-www.bkns.co.in, e-mail : bknskartrenagar@gmail.com

आपकी एक बहन
(राम बाई)

आगामी पक्ष के विशेष अवसर
(1 से 15 अक्टूबर, 2024)
(आश्विन कृष्ण 14 से शुक्ल 13 तक)

जन्म दिवस

2 अक्टूबर(1869)- महात्मा गांधी
2 अक्टूबर (1904)- लाल बहादुर शास्त्री
आश्विन शु.1 (3 अक्टू.)- महाराजा अग्रसेन
4 अक्टूबर (1857)- श्यामजी कृष्ण वर्मा
6 अक्टूबर(1893)-वैज्ञानिक मेघनाद साह
7 अक्टू. (1907)-क्रांतिकारी दुर्गा भाभी
9 अक्टूबर(1907)-भैयाजी दाणी
9 अक्टूबर (1877)-गोपबन्धु दास
आ. शु.8(11अक्टू.)-लोकदेवता कल्लाजी राठौड़
आ. शु.10(13अक्टू.)-श्रीमंत शंकर देव
- स्वामी माधवाचार्य
-हेमचन्द्र विक्रमादित्य
14 अक्टू. (1884)- क्रांतिकारी लाल हरदयाल
15 अक्टू.(1931)-डॉ.अब्दुल कलाम
15 अक्टू.(1882) - महात्मा आनंदस्वामी सरस्वती

बलिदान दिवस / पुण्यतिथि

4 अक्टू.(1857)-जयमंगल पाण्डे व नादिर अली बलिदान
15 अक्टू.(1857)- मुम्बई में मंगल गाडिया और सैयद हुसैन को फांसी

महत्वपूर्ण घटनाएं / अवसर

आश्विन शु.10(12अक्टू.)- लाचित बोरफूकन की मुगलों पर विजय (1671), दिवेर युद्ध में महाराणा प्रताप की विजय (1583), राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्थापना दिवस (1925), राष्ट्र सेविका समिति का स्थापना दिवस (1936)
आश्विन शु.11(14 अक्टू.)- श्रीराम-भरत मिलाप

सांस्कृतिक पर्व / त्योहार

आश्विन शु.8 (11 अक्टू.)-सरस्वती पूजन
आ.शु.10(12 अक्टू.)-विजयादशमी पर्व (दशहरा)

पंचांग- आश्विन (कृष्ण पक्ष)
19-सितम्बर से 2 अक्टूबर, 2024 तक

पंचक समाप्त-19 सितम्बर (सायं 5:15बजे), **चतुर्थी व्रत**-21 सितम्बर, **शरद सम्पात**-22 सितम्बर, **रोहिणी व्रत (जैन)**- 23 सितम्बर, **इंदिरा एकादशी व्रत**-28 सितम्बर, **सोम प्रदोष व्रत**-30 सितम्बर, **देव पितृकार्य अमावस्या**- 2 अक्टूबर

ग्रह स्थिति : **चन्द्रमा** : 19 सितम्बर को **मीन** राशि में, 20 से 22 सितम्बर को **मेष** राशि में 23-24 सितम्बर उच्च की राशि **वृष** में, 25-26 सितम्बर को **मिथुन** राशि में, 27-28 को स्वराशि **कर्क** में, 29-30 सितम्बर व 1 अक्टूबर को **सिंह** राशि में तथा 2 अक्टूबर को **कन्या** राशि में गोचर करेंगे।

आश्विन कृष्ण पक्ष में **गुरु** व **वक्री शनि** यथावत क्रमशः वृष व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमशः पूर्ववत मीन व कन्या राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य**, **मंगल** व **शुक्र** क्रमशः कन्या, मिथुन व तुला राशि में स्थित रहेंगे। **बुध** 23 सितम्बर को प्रातः 10:11 बजे सिंह से कन्या राशि में प्रवेश करेंगे।

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

राजस्थान बजट 2024-25

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

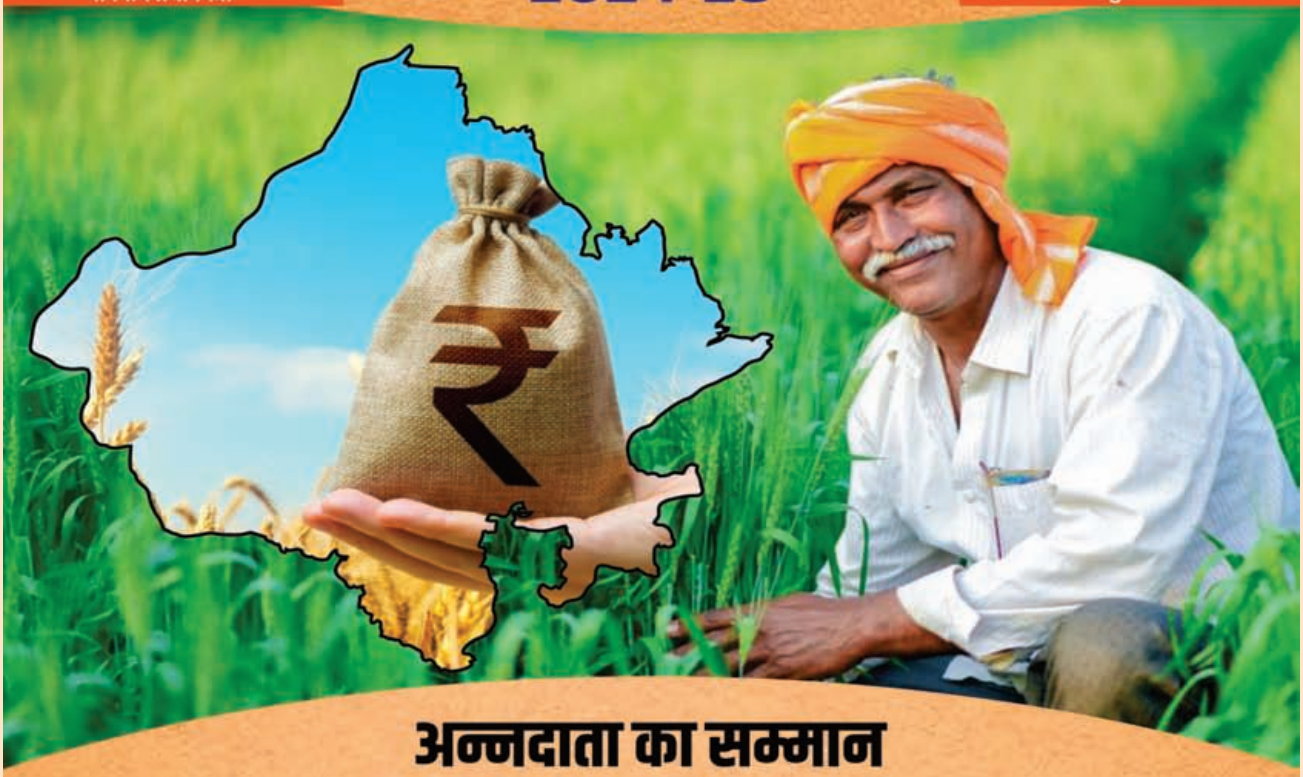

अन्नदाता का सम्मान
बजट में किये विशेष प्रावधान

किसानों के लिए बजट घोषणा के प्रमुख बिंदु :

- **गोवर्धन जैविक उर्वरक योजना**- गौवंश से जैविक खाद उत्पादन करने हेतु **10 हजार रुपये** प्रति कृषक तक की सहायता
- किसानों को इस वर्ष **₹23 हजार करोड़** के ब्याज मुक्त अल्पकालीन फसली ऋण
- किसानों को रियायती दरों पर कृषि यंत्र उपलब्ध करवाने के लिए **1 हजार कस्टम हायरिंग सेन्टर** की स्थापना
- किसानों को लंबित विद्युत कनेक्शन प्रकरणों में **1 लाख 45 हजार** विद्युत कनेक्शन
- संशोधित **पार्वती-कालीसिंध चम्बल** लिंक परियोजना से जल शीघ्र उपलब्ध कराने हेतु बजट आवंटन

बजट उन्नति का, भरोसा प्रगति का

आपणो अग्रणी राजस्थान

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

स्वराज्य संस्थापक

छत्रपति शिवाजी

18

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

क्रमशः

पाक्षिक
पाथेय कण
(16-30 सितम्बर , 2024)
(10 सितम्बर को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY 202/2024-26

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/WPP 01/2024-26

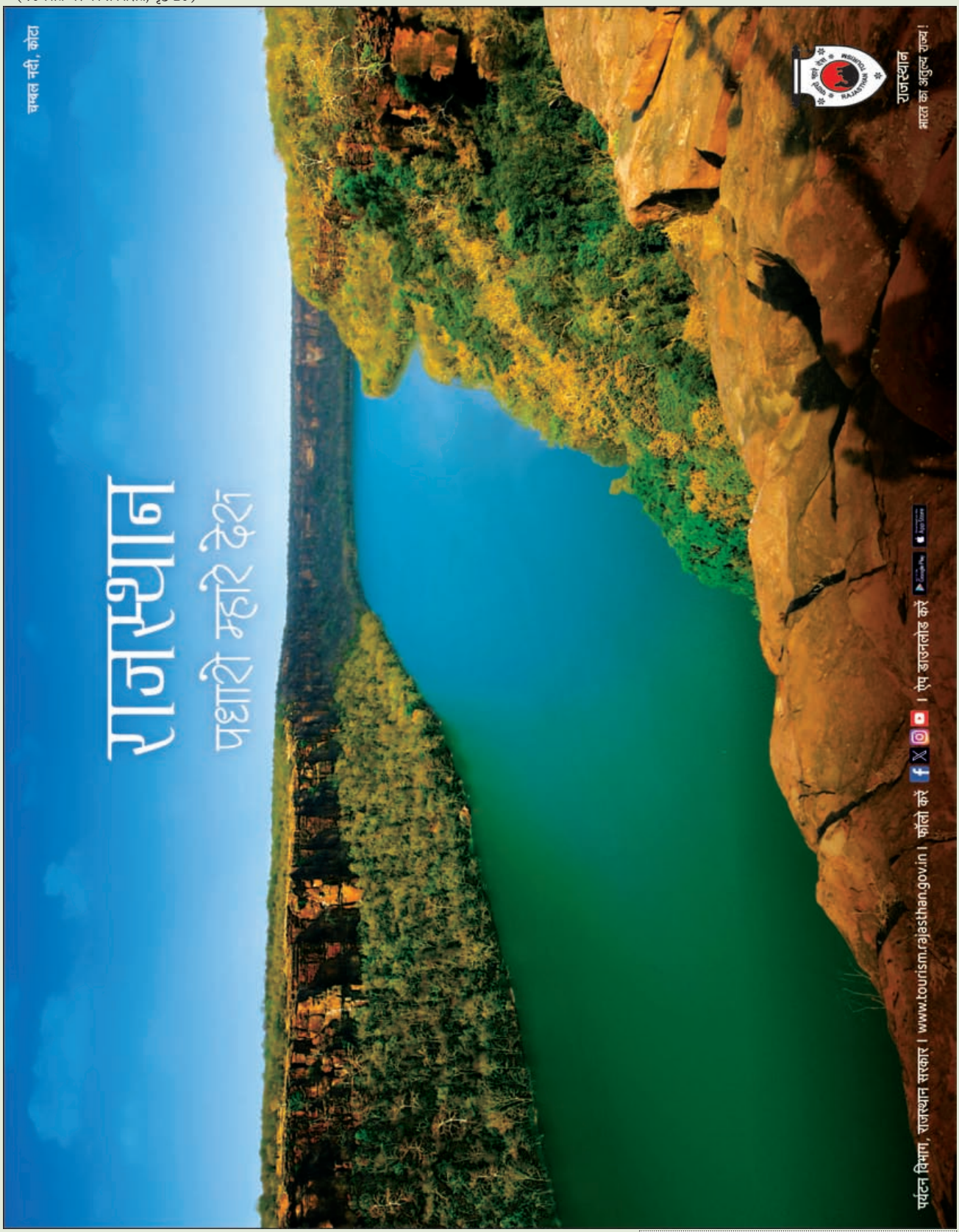

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 सितम्बर, 2024 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,

_____

_____

_____